

धरोहर-2024

पंचम संस्करण



डॉ. भीमराव अम्बेडकर
शासकीय महाविद्यालय पामगढ़
जांजगीर-चाँपा (छ.ग.)



धरोहर-2024

पंचम संस्करण



महाविद्यालय परिवार

1. श्री विजय लहरे (पीजीडीसीए) डॉ. धनंजय मिश्रा (प्राणी शास्त्र) श्री आर. एस. विश्वकर्मा (राजनीति शास्त्र) डॉ. एस के. त्रिपाठी (अंग्रेजी) डॉ. तारनीश गौतम (हिंदी) डॉ. श्वेता जैन (समाजशास्त्र) सुश्री मीरा टंडन (वाणिज्य) श्रीमती चांदनी छाबड़ा (गणित)
2. श्री जे. पी. साहू (प्राचार्य) श्री कमलेश साहू (प्रयोगशाला तकनीशियन) श्री संतोषी उरांव (भूगोल) श्रीमती लक्ष्मी गौरी कुजूर सुमन (वनस्पति शास्त्र) श्री दुर्गेश्वरी पटेल (भौतिक शास्त्र)
3. श्री आलोक चतुर्वेदी (अंग्रेजी) श्री शरद श्रीवास (पं सुंदरलाल शर्मा विवि. सहायक)
4. डॉ आशीष तिवारी (आईक्युएसी समन्वयक एवं रसायन शास्त्र विभाग) श्री विपिन चंदेल (पं सुंदरलाल शर्मा विवि. सहायक) श्री डी. एस.टंडन (सहायक वर्ग 1) श्री ओमप्रकाश खन्ना कंप्यूटर ऑपरेटर

प्राचार्य कि कलम से



॥ विद्या ददातिविनयम ॥

" डॉ. भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय पामगढ़, जिला- जांजगीर-चांपा (छ.ग.) की महाविद्यालयीन पत्रिका 'धरोहर' का पांचवा अंक आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह हमारे समर्पित शिक्षकगण और प्रतिभावान छात्र-छात्राओं की रचनात्मकता और बौद्धिक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन है।

यह पत्रिका भारतीय सभ्यता और संस्कृति की समृद्ध विरासत को दर्शाता है। इसमें छत्तीसगढ़ की धरती की सुगंध और छत्तीसगढ़िया संस्कृति का गौरव झलकता है। हमें गर्व है कि हाल ही में राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा हमारे महाविद्यालय को 'बी' ग्रेड (२.२२ अंक) प्राप्त हुआ है। यह हमारे शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक (खेल, सांस्कृतिक, एनएसएस, रेडक्रॉस आदि) गतिविधियों का सटीक और व्यापक मूल्यांकन है।

यह उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, जनप्रतिनिधियों, जनभागीदारी और गणमान्य नागरिकों के सहयोग का सुखद परिणाम है।

THE TEAM

PATRON

Mr. J. P. Sahu

CHIEF EDITOR

Dr. Ashish Tiwari (IQAC COORDINATOR)

EDITORS –

Dr. S. K. Tripathi(English)

Dr. S.R. Mahendra(Political Science)

Dr. Tarnish Gautam (Hindi)

Ms. Mira Tandon (Commerce)

STUDENT EDITOR

Somesh Shriwas M . A I SEM (POL. SCI.)

संपादक का संदेश:

कॉलेज पत्रिका "धरोहर 2024" का संपादक होने का अवसर प्राप्त करना मेरे लिए अत्यंत गर्व और सौभाग्य की बात है। यह पत्रिका न केवल हमारे प्रतिभाशाली छात्रों को अपनी रचनात्मकता और लेखन कौशल का प्रदर्शन करने का मंच प्रदान करता है, बल्कि यह हमारे महाविद्यालय की समग्र गतिविधियों और उपलब्धियों का भी एक उत्कृष्ट प्रतिबिंब है।

"धरोहर" का प्रत्येक अंक हमारे छात्रों की बहुमुखी प्रतिभा और विचारों की विविधता को दर्शाता है। इसमें कविताएँ, कहानियाँ, निबंध, कलाकृतियाँ और अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ शामिल हैं जो हमारे छात्रों की कल्पनाशीलता, बुद्धिमत्ता और भावनाओं को उजागर करती हैं। यह पत्रिका न केवल छात्रों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करती है, बल्कि उन्हें अपनी लेखन और संपादकीय कौशल विकसित करने में भी मदद करती है।

"धरोहर 2024" में, हमने विशेष रूप से हमारे महाविद्यालय के शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक क्षेत्रों में हुई महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित किया है। इसमें हमारे छात्रों द्वारा हासिल किए गए विभिन्न पुरस्कारों, प्रतियोगिताओं और अन्य गतिविधियों का विवरण शामिल है। यह पत्रिका यह भी दर्शाती है कि कैसे हमारा महाविद्यालय अपने छात्रों को समग्र विकास के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद करता है।

मैं इस अद्भुत पत्रिका को बनाने में योगदान देने वाले सभी लोगों का हृदय से धन्यवाद करना चाहता हूँ। मैं हमारे प्रिय प्राचार्य का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण दायित्व का अवसर प्रदान किया। मैं संपादकीय बोर्ड के सदस्यों और सभी छात्र लेखकों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं और कड़ी मेहनत से इस पत्रिका को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे उम्मीद है कि आप "धरोहर 2024" को पढ़ने और इसमें शामिल विभिन्न रचनाओं का आनंद लेंगे। यह पत्रिका न केवल हमारे महाविद्यालय की जीवंत संस्कृति और गतिविधियों का एक झलक प्रदान करती है, बल्कि यह हमारे छात्रों की प्रतिभा और क्षमता का भी प्रमाण है।

धन्यवाद।

रोग प्रतिरोध और स्वच्छता: प्राचीन भारत के संदर्भ में

DR. ASHISH TIWARI

आयुर्वेद में रोग प्रतिरोधक दवाओं (प्रिवेंटिव मेडिसिन) के स्थान पर, स्वस्थ काया को बनाए रखने और बीमारियों से बचाव करने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इसे संस्कृत में "स्वस्थस्य स्वस्थ्य रक्षणम्" कहते हैं। इसमें संपूर्ण जीवनशैली, उचित आहार, नियमित व्यायाम, मानसिक स्वस्थ और आध्यात्मिक विकास पर बल दिया जाता है।

यहां कुछ प्रमुख आयुर्वेदिक तरीके हैं जो रोगों से बचाव में सहायक होते हैं:
आहार: आयुर्वेद में भोजन को "आयुर्वेद का स्तम्भ" माना जाता है। यह इस बात पर बल देता है कि आप क्या खाते हैं। अपने प्रकृति के अनुसार संतुलित और मौसमी भोजन करना चाहिए।

दिनचर्या : सुबह जल्दी उठना, समय पर सोना, नियमित व्यायाम और योग करना आदि दैनिक आदतें शरीर को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पंचकर्म : यह आयुर्वेद का एक महत्वपूर्ण उपचार है जो शरीर से विषाक्त पदार्थों (आम) को निकालने में मदद करता है। विषाक्त पदार्थों का जमाव शरीर में कई बीमारियों का कारण बन सकता है।

जड़ी-बूटियां : आयुर्वेद में कई जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल किया जाता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करती हैं।

ध्यान और योग : ये अभ्यास तनाव को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करते हैं, जो रोगों से बचाव में महत्वपूर्ण कारक है।

आजकल यह समझा जाता है कि स्वच्छता आधुनिक विज्ञान का विषय है, जिसे विकसित पश्चिमी देशों ने सिखाया है। पिछले 2-3 सौ सालों से पश्चिमी लोगों को यह गलतफहमी थी कि भारतीय स्वच्छता नहीं रखते। असल में, प्राचीन भारत में व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों तरह की स्वच्छताका बहुत महत्व था।

मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और सिंधु घाटी सभ्यता के अन्य शहरों के पुरातात्विक अध्ययन से इसका पता चलता है। प्राचीन भारत के आयुर्वेदिक ग्रंथों और धार्मिक ग्रंथों में भी स्वच्छताके कई उल्लेख मिलते हैं।

भारत में इतना ज़ोर स्वच्छता पर दिया जाता था कि भगवद गीता में भी इसे दैवीय स्वभाव वाले सज्जन पुरुषों की विशेषता माना गया है, जबकि गंदगी को आसुरी प्रवृत्ति की निशानी बताया गया है। इन ग्रंथों और योग के ग्रंथों में मानसिक स्वच्छता के महत्व को भी बताया गया है।

•ऋग्वेद में भी बताया गया है कि बीमारी स्वच्छता ना रखने से होती है। ज्ञान (या ज्ञानी व्यक्ति) के गुण बताते समय भगवद गीता में भी स्वच्छता को महत्वपूर्ण माना गया है।

•यज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि वैदिक ज्ञान के साथ-साथ शिक्षक को छात्रों को स्वच्छता और सदाचार भी सिखाना चाहिए। दक्ष स्मृति में कहा गया है कि हमेशा स्वच्छता रखने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि बिना स्वच्छताके सारे काम बेकार हैं। मनु स्मृति में भी स्वच्छता के महत्व को इन शब्दों में स्वीकार किया गया है, "जो स्वच्छतानहीं रखता वह असमय नष्ट हो जाएगा।"

•गर्ग पुराण में कहा गया है कि शरीर को स्वस्थ रखने का हर संभव प्रयास करना चाहिए और स्वास्थ्य का सबसे अच्छा तरीका स्वच्छता है। गरुड़ पुराण कहता है कि जब तक साफ ना हो जाएं तब तक स्वच्छताकरनी चाहिए।

•चरक ने विभिन्न प्रकार के रोग पैदा करने वाले जीवों का वर्णन करते हुए लिखा है कि इन जीवों के शरीर में प्रवेश करने का मुख्य कारण स्वच्छतामें लापरवाही है। इतना ही नहीं, चरक ने 'स्वच्छता पसंद ना करना' को पागलपन का एक खास लक्षण माना है। आयुर्वेदिक ग्रंथ अष्टांग संग्रह में कहा गया है कि नाखून, पैर और शरीर के अन्य सभी निकासों को बार-बार साफ करना चाहिए।

•सुश्रुत ने स्वच्छता को दो भागों में बांटा है: बाहरी और आंतरिक। नहाना आदि क्रियाओं से बाहरी स्वच्छता की जा सकती है, जबकि आंतरिक (मानसिक) स्वच्छता वेदों और स्मृतियों के मार्गदर्शन का पालन करके प्राप्त की जा सकती है। मानसिक स्वच्छता के संबंध में भी 'पवित्रता' को ब्रह्म मन का पहला गुण माना जाता है, जो चरक के अनुसार सभी मनो में सबसे शुद्ध मन है।

•ये संदर्भ स्पष्ट रूप से बताते हैं कि प्राचीन भारत में स्वच्छताको बहुत महत्व दिया जाता था और इसका पालन किया जाता था।

राम मंदिर संघर्ष

साल 1528: मुगल बादशाह बाबर के सिपहसालार मीर बाकी ने (विवादित जगह पर) एक मस्जिद का निर्माण कराया। इसे लेकर हिंदू समुदाय ने दावा किया कि यह जगह भगवान राम की जन्मभूमि है और यहां एक प्राचीन मंदिर था। हिंदू पक्ष के मुताबिक मुख्य गुंबद के नीचे ही भगवान राम का जन्मस्थान था। बाबरी मस्जिद में तीन गुंबदें थीं।

साल 1853-1949 तक: 1853 में इस जगह के आसपास पहली बार दंगे हुए। 1859 में अंग्रेजी प्रशासन ने विवादित जगह के आसपास बाड़ लगा दी। मुसलमानों को ढांचे के अंदर और हिंदुओं को बाहर चबूतरे पर पूजा करने की इजाजत दी गई।

साल 1949: असली विवाद शुरू हुआ 23 दिसंबर 1949 को, जब भगवान राम की मूर्तियां मस्जिद में पाई गईं। हिंदुओं का कहना था कि भगवान राम प्रकट हुए हैं, जबकि मुसलमानों ने आरोप लगाया कि किसी ने रात में चुपचाप मूर्तियां वहां रख दीं। यूपी सरकार ने मूर्तियां हटाने का आदेश दिया, लेकिन जिला मैजिस्ट्रेट (डीएम) केके नायर ने दंगों और हिंदुओं की भावनाओं के भड़कने के डर से इस आदेश को पूरा करने में असमर्थता जताई। सरकार ने इसे विवादित ढांचा मानकर ताला लगवा दिया।

RAM MANDIR

साल 1950: फैजाबाद सिविल कोर्ट में दो अर्जी दाखिल की गई। इसमें एक में रामलला की पूजा की इजाजत और दूसरे में विवादित ढांचे में भगवान राम की मूर्ति रखे रहने की इजाजत मांगी गई। 1959 में निर्मोही अखाड़ा ने तीसरी अर्जी दाखिल की।

साल 1961: यूपी सुन्नी वक्फ बोर्ड ने अर्जी दाखिल कर विवादित जगह के पजेशन और मूर्तियां हटाने की मांग की।

साल 1984: विवादित ढांचे की जगह मंदिर बनाने के लिए 1984 में विश्व हिंदू परिषद ने एक कमिटी गठित की।

साल 1986: यूसी पांडे की याचिका पर फैजाबाद के जिला जज केएम पांडे ने 1 फरवरी 1986 को हिंदुओं को पूजा करने की इजाजत देते हुए ढांचे पर से ताला हटाने का आदेश दिया।

6 दिसंबर 1992: वीएचपी और शिवसेना समेत दूसरे हिंदू संगठनों के लाखों कार्यकर्ताओं ने विवादित ढांचे को गिरा दिया। देश भर में सांप्रदायिक दंगे भड़के गए, जिनमें 2 हजार से ज्यादा लोग मारे गए।

साल 2002: हिंदू कार्यकर्ताओं को लेकर जा रही ट्रेन में गोधरा में आग लगा दी गई, जिसमें 58 लोगों की मौत हो गई। इसकी वजह से गुजरात में हुए दंगे में 2 हजार से ज्यादा लोग मारे गए।

साल 2010: इलाहाबाद हाई कोर्ट ने अपने फैसले में विवादित स्थल को सुन्नी वक्फ बोर्ड, रामलला विराजमान और निर्मोही अखाड़ा के बीच 3 बराबर-बराबर हिस्सों में बांटने का आदेश दिया।

साल 2011: सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या विवाद पर इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर रोक लगाई।

साल 2017: सुप्रीम कोर्ट ने आउट ऑफ कोर्ट सेटलमेंट का आह्वान किया। बीजेपी के शीर्ष नेताओं पर आपराधिक साजिश के आरोप फिर से बहाल किए।

8 मार्च 2019: सुप्रीम कोर्ट ने मामले को मध्यस्थता के लिए भेजा। पैनल को 8 सप्ताह के अंदर कार्यवाही खत्म करने को कहा।

1 अगस्त 2019: मध्यस्थता पैनल ने रिपोर्ट प्रस्तुत की।

2 अगस्त 2019: सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मध्यस्थता पैनल मामले का समाधान निकालने में विफल रहा।

6 अगस्त 2019: सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या मामले की रोजाना सुनवाई शुरू हुई।

16 अक्टूबर 2019: अयोध्या मामले की सुनवाई पूरी। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा।

9 नवंबर 2019: सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की बेंच ने राम मंदिर के पक्ष में फैसला सुनाया। 2.77 एकड़ विवादित जमीन हिंदू पक्ष को मिली। मस्जिद के लिए अलग से 5 एकड़ जमीन मुहैया कराने का आदेश।

25 मार्च 2020: तकरीबन 28 साल बाद रामलला टेंट से निकलर फाइबर के मंदिर में शिफ्ट हुए।

5 अगस्त 2020: राम मंदिर का भूमि पूजन कार्यक्रम। पीएम नरेंद्र मोदी, आरएसएस सरसंघचालक मोहन भागवत, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ और साधु-संतों समेत 175 लोगों को न्योता। अयोध्या पहुंचकर हनुमानगढ़ी में सबसे पहले पीएम मोदी ने किया दर्शन।

राम मंदिर के भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल। अंततः सनातन धर्म की विजय हुई, देश में भगवा लहरा गया। हिंदू वीरों, कारसेवकों का बलिदान, गुरु गोविंद सिंह जी का सनातन धर्म के लिए संघर्ष कभी भुलाया नहीं जा सकता।

22 जनवरी 2024 रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए चुना गया है।

Manish Dubey
B.Sc. II (Maths)

प्रेरणा गीत

* * बेटा-बेटी एक बराबर * *

बेटों का सम्मान जगत में, बेटी का कोई मान नहीं ।
दुनियाँ वालों, ये तो बता दो, बेटी क्या संतान नहीं॥

1. बेटा क्या लेकर आया है, बेटी जो न लाई है।
बेटी के बिना सूली-सूनी, भाई की लगी कलाई है।
रक्षाबंधन, भाई दूज का, तुमको कुछ भी ध्यान नहीं।
दुनियाँ वालों ये तो बता दो, बेटी क्या संतान नहीं ॥

2. बेटा साथ छोड़ भी देगा, बेटी साथ न छोड़ेगी ।
छोड़ेगी जिस दिन ओ, दोनों कुल से नाता तोड़ेगी॥
कन्या दान के जैसा भक्तों, कोई दूजा दान नहीं।

दुनियाँ वालो ये तो.....

3. बेटा-बेटी एक बराबर, दोनों में न कोई छोटा है।
जो दोनों में फर्क करेगा , वो तो नियत का खोटा है ॥
नियत के खोटो सुन लो कहना, तुम अच्छे इंसान नहीं।
दुनियाँ वालों ये तो बता दो, बेटी क्या संतान नहीं ॥

Mamta Tandan

B.Sc. – III Year (Bio)

हिम्मत न हारो : आरती धीवर

जब कोई काम बिगड़ जाये,

जैसा कि कभी - कभी होगा

जब रास्ता सिर्फ चढ़ाई का ही दिखता हो

जब पैसे कम और कर्ज ज्यादा हो

जब मुस्कराहट की इच्छा आह बने,

जब चिंतायें दबा रही हों

तो सुस्ता लो, लेकिन हिम्मत न हारो

भूल - भुलैया है ये जीवन

पगडंडिया जिसकी हमें पार करनी है

कई असफल तब लौट गये

पार होते गये जो आगे बढ़ते गये

धीमी रफ्तार तो क्या

मंजिल को इक दिन पाओगे

सफलता छिपी असफलता में ही

जैसे शंका के बादल में आशा की चमक

नाप सकोगे क्या इतनी दूरी

दूर दिखती है लेकिन मुमकिन है यह नजदीक हो

उटे रहो चाहे कितनी भी मुश्किल हो

चाहे हालात जितने भी बुरे हों, लेकिन हिम्मत न हारो, उटे रहो।

कोशिश कर हल निकलेगा

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा ॥
अर्जुन सा तीर साध
मरुस्थल से भी जल निकलेगा ॥
मेहनत कर, पौधो को पानी दे,
बंजर जमीन से फल निकलेगा ॥
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी बल निकलेगा ॥
जिन्दा रख, दिल में अमीदों को
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा ॥
कोशिश जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा -थमा सा, चल निकलेगा ॥
कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा ॥

छाया नोरगे

बी. एस.सी. द्वितीय वर्ष(बायो.)

बारिश

बारिश की बूंदें हमसे कुछ कहती हैं, सुनो क्या...!!
मैं एक आस हूँ, जो तुम्हारी प्यास मिटा दूँ!
मैं ऐसा पदार्थ हूँ, जो तुम्हें जीवन दिलाऊँ !!

बारिश की बूंदे कुछ कहती है, सुनो...
युहीं नहीं बरसात मे सब मुस्कुराते हैं, मन में कुछ राग लिए
तुम झूम उठो सारी खुशियाँ फिर से आ जाती हैं!!

बारिश की बूंदे कुछ कहती है, सुनो

ये जो बिजली की चमक आसमान में चमकती है,
मानो जैसे किसी ने युद्ध छेड़ दिया हो !
के तुम अपने जीवन में ऐसे चमकना
जैसे किसी ने आसमान से ज़मीन पर तारें बिछा दिया हो !!

बारिश की बूंदे कुछ कहती है, सुनो....

मेरी एक-एक बूँद पर तुम ताल मिलाओ,
मेरी हर एक लहर पर तुम राग बनाओ!
झरनों से गिरती ओस की बूंदो से
तुम समुंदर का एक नया ख़्वाब सजाओ !!

बारिश की बूंदे कुछ कहती है, सुनो...

मैं जिस तरह पथ पे बहती जाऊँ,
पत्थरो और चट्टानों से लड़ती जाऊ !
उस पथ पे तुम अपनी एक मंजिल बनालो !!

बारिश की बूंदे कुछ कहती है, सुनो....

जल के बिना जीवन न कोई, हमारे जीवन का मोल न कोई!
जल ना रहे जीवन में तो सृष्टि का निर्माण ना होता,
मेरा भी अंत ना करो ,पृथ्वी का निर्माण हूँ मैं!!

बारिश की बूंदे कुछ कहती है, सुनो.....

मुझे मिटा के दुनिया से जी ना पाओगे,
तुम्हारी आयु का वरदान हूँ मैं!!

रीमा खरे

B.Sc. III year Bio

कॉलेज का पहला दिन

याद है वह सुबह जब कॉलेज का पहला दिन था .

खुश भी थे ,सेहमे भी थे नहीं पता था इस अंजान सी जगह क्या होगा?

अभी अभी स्कूल खत्म हुआ ही था, तो बस सुना ही था कि कॉलेज में ऐसा होता है, वैसा होता है,

आज हम उसे खुद महसूस करने जा रहे हैं! सब नया-नया सा लग रहा था.

बिल्कुल वैसा जैसा सब कहते थे, वो पल याद है क्या?

जब पहली बार क्लास में बैठे थे तो एक मुस्कान भी चेहरे पे जो वो फर्स्ट ईयर वाला ग्लो जो होता है ।

एक जोशथा कुछ करने के लिए जो पता नहीं था वह आगे चल के खत्म हो जाएगा ।

बस कुछ दिन की बात थी फिर भी अपने जैसे दोस्त मिल गए ।

थोड़े दिन घबराहट के बाद इस माहोल में हम भी घुल गए ।

बात बात पे तो कॉलेज फेस्ट होने लगता है उनके बीच में इंटरनल के टेस्ट होने लगते हैं ।

इंटरनल मार्क्स के नाम पर हमसे क्या-क्या करवाया जाता है

क्विज, फाइल, प्रोजेक्ट, आदि सब एक साथ बनवाया जाता है !

ऐसा नहीं है हम सिर्फ बत्तमीजीया ही करते हैं , टीचर के दिल से बहुत इज्जत भी करते हैं.

तभी तो शिक्षक कुछ प्रश्न पूछे तो उनके सामने मौन व्रत होता था ।

बडो के सामने ज्यादा बोलना नहीं चाहिए हमने शुरू से यही सीखा है

Maharathi Patel

B.Sc. II (Maths)

हर कोई मेहमान यहाँ पर !

छोड़ दे ईर्ष्या जल जायेगा,
जो मिलना है मिल जायेगा।
सूरज की गर्मी से मत डर,
साँझ होते ही ढल जायेगा।
चाहे जैसा महल बना लें,
वक्रत आने पर हिल जायेगा।
हर कोई मेहमान यहाँ पर,
आज नहीं तो कल जायेगा।
थोड़ी सी रफ़्तार बढ़ा ले,
तू भी सँग-सँग चल जायेगा।
'सूना' मन में धीरज धरना,
खोया प्रियतम मिल जायेगा।

Jay Kumar

BSc II Bio

ARTS GALLERY



SHRUTI
B. Sc- II (BIO)





Sajana Shriwas
Class. B.Sc.II (Bio)



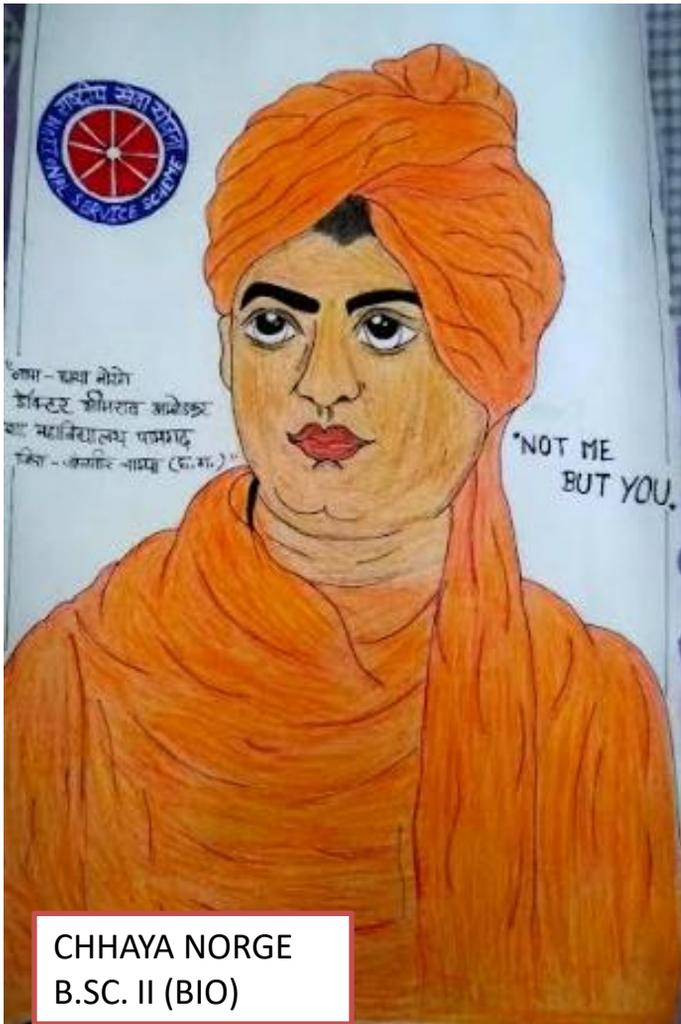
Name - Jyoti Kewat
Class - B.Sc.III (Bio)



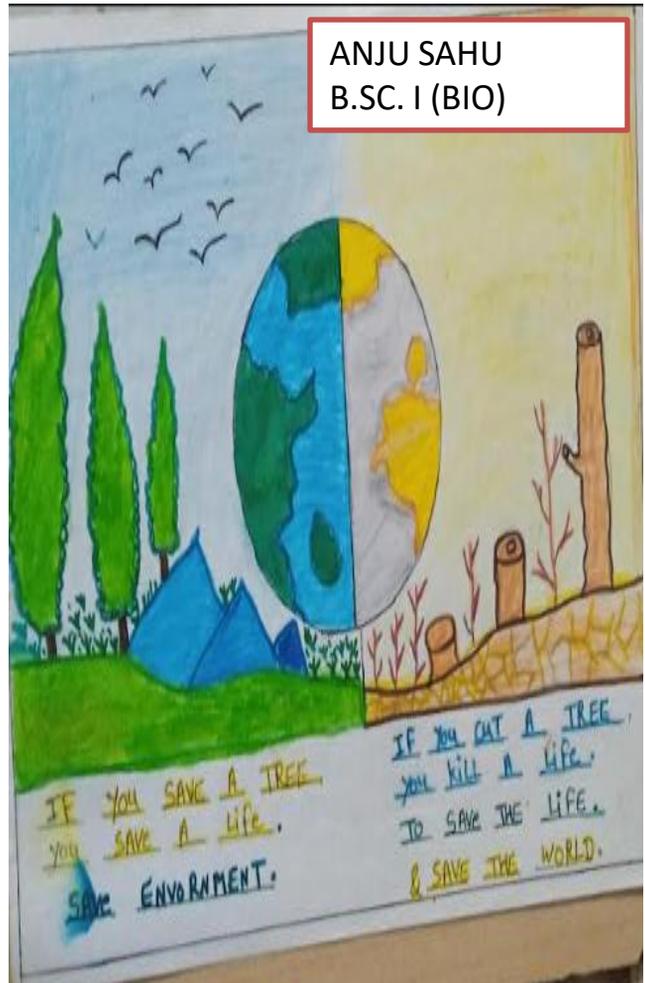
Name Neha Dhirhi
Class - B.Sc.II (Bio)



CHHAYA NORGE
B.SC. II (BIO)



CHHAYA NORGE
B.SC. II (BIO)



ANJU SAHU
B.SC. I (BIO)

SPORTS ACHIEVEMENT

Chandraprakash Ratre: Champion Runner

MA is a first semester Political Science student who has achieved success in athletics competitions.

Sector level athletics competition: Secured 1st position in both 1500 meters and 800 meters races.

State level athletics competition: Secured 1st position in 1500 meters race and 3rd position in 800 meters race.

All India Inter University Athletics competition: Achieved 5th rank.

